Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
March 2026
ISSN 2229-3388

वर्तमान समय में भगत सिंह के वैचारिक दर्शन का एक अध्ययन

देवेन्द्र सिंह, शोधार्थी

डॉ0 शगुफ्ता परवीन, शोध निर्देशिका

Department of Arts

Faculty of Humanities

Mangalayatan University, Beswan Aligarh

सारांश, वर्तमान परिस्थितियों में भगत सिंह के विचार (जैसे साम्राज्यवाद–विरोधी, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, वर्ग–चेतना और युवाओं की सक्रिय भागीदारी) आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं, खासकर सांप्रदायिकता, आर्थिक असमानता और राजनीतिक भ्रष्टाचार जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए, जहाँ उनके दर्शन एक इंकलाब (क्रांति) के लिए वैज्ञानिक सोच, धर्म से राजनीति को अलग करने और शोषण–मुक्त समाज के निर्माण का मार्ग दिखाते हैं। आज भी देश में धार्मिक और सांप्रदायिक दंगे आम हैं, और राजनीति में धर्म का इस्तेमाल होता है। भगत सिंह का समाधान उन्होंने दंगों का मूल कारण आर्थिक बदहाली बताया और वर्ग–चेतना को सांप्रदायिकता का इलाज माना, जहाँ इंसान को इंसान के रूप में देखा जाए, न कि किसी धर्म के अनुयायी के रूप में। बढ़ती आर्थिक असमानता और पूंजीवाद का प्रभुत्व है। भगत सिंह का समाधान वे मार्क्सवाद के समर्थक थे और उनका लक्ष्य समाजवादी व्यवस्था स्थापित करना था, जहाँ शोषण खत्म हो और संसाधनों का समान वितरण हो। धर्म का राजनीतिकरण होता है और यह समाज को बांटता है। भगत सिंह का समाधान उनका मानना था कि धर्म व्यक्तिगत मामला है और इसे राजनीति से दूर रखना चाहिए। उनका नास्तिकतावाद (theism) अंधविश्वासों पर सवाल उठाने और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने का प्रतीक है।

मुख्य शब्द, नास्तिकतावाद, समाजवादी, धर्मनिरपेक्षता, साम्राज्यवाद–विरोधी, इंकलाब आदि।

प्रस्तावना, युवा अक्सर राजनीति से दूर रहते हैं, जिससे अपराधी और भ्रष्ट तत्व हावी होते हैं। भगत सिंह का समाधान उन्होंने युवाओं को राजनीति में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि वे देश की दिशा तय कर सकें और व्यवस्था में सुधार ला सकें। आज भी कई लोग क्रांति को केवल हिंसा मानते हैं। भगत सिंह का समाधान उनके लिए क्रांति समाज का व्यवस्थित पुनर्निर्माण थी, जिसमें मौजूदा व्यवस्था को उखाड़ फेंककर एक बेहतर और समाजवादी आधार पर नया समाज बनाना था। भगत सिंह एक विचारक, चिंतक और बुद्धिजीवी थे, जो केवल स्वतंत्रता सेनानी नहीं थे, बल्कि एक समतावादी, बहुलवादी और शोषण–मुक्त भारत का सपना देखते थे। उनके विचार, जो आज भी युवाओं को प्रेरित करते हैं, वर्तमान भारत की चुनौतियों का सामना करने के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ हैं।

राजकोषीय, औद्योगिक, धार्मिक और शैक्षिक जैसी सभी राजनीति ब्रिटिश सत्ता और शासन की स्थापना और ईस्ट इंडिया कंपनी को आर्थिक लाभ पहुंचाने के लिए तैयार की गई थी। इस अवधि के दौरान कई अधिनियम पारित किए गए जैसे कि रेग्युलेटिंग एक्ट 1773, एक्ट ऑफ सेटलमेंट 1781, पिट्स

इंडिया एक्ट 1784, एक्ट 1786, चार्टर एक्ट 1793, चार्टर एक्ट 1813, 1833 और 1853 जो अंग्रेजों के लिए और अंग्रेजों द्वारा बनाए गए थे। भारत के गवर्नर जनरल डलहौजी ने 29 मार्च 18492 को पंजाब को इंग्लैंड की महारानी के साम्राज्य में मिला लिया।[2] यह डलहौजी की ओर से स्वेच्छाचारी और व्यक्तिगत कार्रवाई थी। इस अधिनियम के अनुसार, धर्म परिवर्तन के बाद ही कोई व्यक्ति पैतृक संपत्ति का सही मालिक बन सकता था।[3]

यह कानून स्पष्ट रूप से हिंदुओं, मुसलमानों और सिखों को ईसाई बनाने के उद्देश्य से बनाया गया था। यह क्रांति भारतीय लोगों की ब्रिटिश शासन के प्रति असहमति का स्पष्ट बयान थी जिसे रोकने के लिए हर ब्रिटिश तकनीक और फार्मूले के बावजूद हर कोण से दबाना असंभव था।[4] इसलिए भगत सिंह के जीवन के क्रांतिकारी काल को भारत में उनके जीवन से पहले और उसके दौरान जो कुछ हो रहा था उसके प्रकाश में देखा जाना चाहिए। भारत की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि को प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अर्थात 1857 के विद्रोह से लेकर भारत के विभिन्न भागों में नए क्रांतिकारी समूहों की स्थापना के काल तक देखा जा सकता है, जिन्होंने अंतिम लक्ष्य अर्थात लोगों की स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए आगे संघर्ष किया। लेकिन यह एक दिन में सर्वोच्च उपलब्धि प्राप्त करने का कार्य नहीं था। 1857 के विद्रोह ने सभी स्वतंत्रता सेनानियों को संघर्ष की शुरुआत करने के लिए सीमा पर खड़ा कर दिया, तथा इस युद्ध के बाद की घटनाओं ने उन हिंसक समूहों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए बहुत संघर्ष किया। दूसरे शब्दों में इस विद्रोह के दमन ने युवाओं के मन में असंतोष पैदा किया, क्योंकि क्रोध की आग उनके दिलों में सुलगती रही।[5] कुछ लोगों ने तो यह भी सोचा कि हिंसक तरीके से लड़ना बेकार है, लेकिन कुछ अन्य लोगों की गतिविधियों ने देश के माहौल को राजनीतिक संगठन और पत्रकारिता के उद्यम के साथ विकसित कर दिया। मुख्य मुद्दा स्वतंत्रता प्राप्त करना था, न कि इसे लेने का तरीका। आज हम यह नहीं कह सकते कि भारत को आजादी सिर्फ क्रांति के तरीके से मिली। लेकिन ऐतिहासिक घटनाओं पर नजर डालने से हम यह समझ सकते हैं कि हिंसक कार्रवाइयों के साथ–साथ शांति पूर्ण गतिविधियों ने भी इसमें योगदान दिया। आजादी की लड़ाई के सभी तरीके आपस में जुड़े हुए हैं। हम उन्हें अलग–अलग नहीं कर सकते। आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक स्वायत्तता के लिए भारतीय लोगों की क्रांतिकारी सशस्त्र सेना। हम यह भी कह सकते हैं कि ब्रिटिश नीतियाँ भारत की अर्थव्यवस्था और शांति के पक्ष में नहीं थीं।

साम्राज्य के विभिन्न भागों में विकास के बावजूद, भारत एकमात्र ऐसा क्षेत्र था जो गरीबी और संकट का प्रतीक था। सच तो यह था कि ब्रिटिश सत्ता स्थापना की प्रक्रिया का अंत सभी भारतीय स्रोतों के लुप्त होने के साथ हुआ। इसके अलावा, बर्मा, अफगानिस्तान, नेपाल के खिलाफ ब्रिटिश सरकार द्वारा लड़े गए युद्धों ने भारत पर खर्चों का भारी कर्ज डाल दिया।[6] सैन्य खर्चों पर विचार न करते हुए, अंग्रेज पूरी जिम्मेदारी भारत की बढ़ती जनसंख्या पर डाल रहे थे। इसके अलावा भारतीयों के प्रति अंग्रेजों का व्यवहार बहुत ही असभ्य और परेशान करने वाला था। कभी–कभी तो यह नस्लीय भेदभाव से आगे बढ़कर पशु–व्यवहार तक पहुंच जाता था। अंग्रेजों द्वारा हमारे लोगों पर इस तरह का व्यवहार और क्रूर हमलों का लंबा सिलसिला, जिसे समझा जा सकता है, बर्दाश्त करने योग्य नहीं था बल्कि उबाने वाला था और लोगों के दिलों में कभी न खत्म होने वाली आग पैदा कर गया। दादा भाई नरोजी, आर.सी. दत्त और बिपिन चंद्र पाल (न्यू इंडिया साप्ताहिक से) ने भारत और भारतीय किसानों के आर्थिक पतन

के एक ही मुद्दे पर विरोधाभासी तर्क दिए, जो इसकी आबादी का बहुमत थे क्योंकि ब्रिटिश शासकों की कुछ भूमि प्रणाली ने उन्हें और अधिक गरीब बना दिया और साम्राज्यवादी लाभ को अधिकतम किया।[7] ऊर्जा का ऐसा ह्रास शासकों द्वारा शासितों को दिए जाने वाले कम–श्रम–मजदूरी के कारण हो रहा था। दादाभाई नौरोजी ने 1900 में देखा और कहा, कि भारतीय मूल निवासी या मजदूर अमेरिकी गुलामों से भी बदतर थे। जबकि, डॉ. आर.सी. दत्त ने अंग्रेजों की राजस्व प्रणाली की पूरी सच्चाई को उजागर किया जो किसानों को गरीबी और भुखमरी में डालने के लिए जिम्मेदार थी। इसलिए, क्रांतिकारी गतिविधियों ने रोटी से लेकर स्वतंत्र जीवन और स्वतंत्रता प्राप्त करने की लड़ाई की मिट्टी पर बिछना शुरू कर दिया।[8] जैसा कि एक बंगाली अखबार ने भारतीय लोगों की स्थिति के बारे में अपने विचार इन शब्दों में प्रकट किए– उसने अपनी जीवन शक्ति खो दी, उसने अपना सार खो दिया, उसका जीवन रक्त ही सूख गया है, और वह केवल हड्डियों का बना हुआ है। वह आधा खाया हुआ है, वह आधा कपड़े पहने हुए है।[9]

1897 में पूना की प्लेग महामारी को अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ हिंसक कार्रवाई की ओर पहला कदम माना जा सकता है। श्री रैंड, अंग्रेज को कुछ सशस्त्र सैनिकों के साथ संक्रमित घरों को बलपूर्वक खाली करने के लिए नियुक्त किया गया था। लोगों को उनकी आवश्यक चीजों के बिना उनके स्थानों से बाहर निकालने के उनके हमलावर तरीके ने लोगों को आतंकित और क्रोधित कर दिया। श्री रैंड उनकी नजरों में एक असभ्य व्यक्ति बन गए।[10] सैनिकों ने लोगों को बलपूर्वक उनके घरों से निकाल कर, उन्हें पृथक शिविरों में डाल दिया, जिससे उनके घर और दुकानें असुरक्षित हो गईं और संपत्ति की सुरक्षा के बिना खुल गईं। लोगों की शिकायत को सरकारी कर्तव्यों के प्रति एक अमूर्तता के रूप में लिया गया। महान भारतीय वक्ता श्री लोकमान्य तिलक ने प्लेग को नियंत्रित करने के बहाने लोगों के साथ इस अत्याचार के खिलाफ अपने समाचार पत्र केसरी में लिखा। उन्होंने ब्रिटिश भारतीय सरकार और श्री रैंड पर इस तरह के अत्याचारों का आरोप लगाया।

शोध पूर्व साहित्यक का अवलोकन

लाल चमन (2019) पुस्तक समीक्षा: भगत सिंह – तर्क का दीपक जो जलना बंद हो गया, 28 सितंबर को क्रांतिकारी के जन्मदिन पर, अमर कान्ये जेट्टू की पुस्तक वॉकिंग विद भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके विचारों और भूमिका पर केंद्रित है और मार्क्सवादी परंपरा में उनके विचारों की व्याख्या करती है। ऐसा शायद ही कोई समय रहा हो जब भगत सिंह पर किताबें या अन्य प्रकाशन नहीं लिखे गए हों। इसकी शुरुआत 1929 में हुई जब भगत सिंह पर प्रकाशन ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रतिबंधों का लक्ष्य बन गए। अब तक लगभग 20 भारतीय और विदेशी भाषाओं में भगत सिंह पर 600 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जहाँ कई किताबें उनके जीवन की रोमांटिक कहानियों पर आधारित हैं, वहीं कुछ किताबें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके विचारों और भूमिका पर केंद्रित हैं।

घोष अजय (1928) op-cit सितम्बर 1928 में दिल्ली के निकट कोटला फिरोज शाह में 82वीं बैठक हुई। इसमें कुल 60 क्रांतिकारी एकत्रित हुए, जिनमें पाँच महिलाएँ भी थीं। भगत सिंह उस सम्मेलन के सचिव थे। उस बैठक का भगत सिंह के जीवन और भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में बहुत महत्व और प्रभाव था। उस सम्मेलन में पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और राजपूताना से क्रांतिकारी पहुँचे, लेकिन बंगाल से बहुत कम लोग आए, क्योंकि वे अभी भी भगत सिंह के समाजवादी विचारों और उनके नेतृत्व

से सहमत नहीं थे। इस बैठक में बी.के. दत्त, विजय कुमार सिन्हा, ब्रह्म दत्त, महिंदर पांडे, जतिंदर नाथ दास, यशपाल, भगवती चरण, राज गुरु, महावीर सिंह, सरदूल सिंह मौजूद थे।

चंद्रशेखर आजाद उस बैठक में शामिल नहीं हो पाए। उन्होंने प्रतिभागियों के लिए संदेश भेजा कि बैठक का कोई भी निर्णय या निष्कर्ष उन्हें स्वीकार्य होगा। यह महसूस करते हुए कि जो लोग चाहते थे, वे सभी आ गए हैं भगत सिंह ने सभी साथियों को संबोधित किया। उन्होंने कहना शुरू किया कि आजादी का मतलब सिर्फ अंग्रेजों का भारत से चले जाना नहीं है। इसका मतलब भारत के लिए एक मजबूत भविष्य का निर्माण करना भी है। उन्हें राजनीतिक आजादी तो मिलेगी लेकिन उन्हें यह भी सोचना चाहिए कि कानून कैसे स्थापित होंगे। आने वाली राजनीतिक व्यवस्था के बारे में किसी के पास स्पष्ट विचार नहीं है। उन्होंने बिना किसी संदेह के कहा कि अगर आजादी के बाद क्रांतिकारी देश का नेतृत्व करेंगे तो सत्ता आम लोगों के हाथ में होगी। इसलिए उन्होंने पार्टी का नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन रखने का अनुरोध किया। पार्टी के नाम में सोशलिस्ट शब्द जोड़ना कोई साधारण नहीं, बल्कि ऐतिहासिक घटना थी। इस घटना के महत्व को समझने के लिए हमें उस समय की राजनीतिक स्थिति को भी समझना होगा। यह पहली बार था जब पार्टी का आदर्श वाक्य स्पष्ट और स्पष्ट घोषित किया गया था। यह विचार रूस की क्रांति से प्रभावित था और श्री विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा और सुखदेव ने भगत सिंह के उनके विचार का समर्थन किया। सभी साथियों ने इस मुद्दे पर कुछ देर तक चर्चा की और हाथ उठाकर इसे स्वीकार कर लिया। पुलिस रिपोर्ट के अनुसार यह बैठक 8 अगस्त, 1928 को कोटला फिरोज शाह में हुई थी।

सिंह मालविंदरजीत वरैच, (1928) भगत सिंह और उनके साथी, सभी राज्यों के प्रभारी चुने गए। विजय कुमार सिन्हा को राज्यों के बीच संबंध प्रतिनिधि के रूप में चुना गया। सुरिंदर पांडे, ब्रह्म दत्त और मनमोहन बनर्जी को सहायक आयोजक के रूप में चुना गया। हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की एक सेना शाखा "हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी" के नाम से बनाई गई और चंद्रशेखर आजाद को उस सेना का कमांडर चुना गया। पार्टी को मजबूत करने के लिए इसे दो हिस्सों में विभाजित किया गया। एक भाग में कार्यकर्ता शामिल होंगे, जबकि दूसरे में सहायक होंगे, जो धन, हथियार और अन्य आपूर्ति जैसे स्रोत एकत्र करेंगे और पार्टी में नए सदस्यों की भर्ती करेंगे। उस समय भारत में "हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी" की स्थापना करना बहुत महत्वपूर्ण था। अजय कुमार घोष ने कहा कि जहाँ तक सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न का प्रश्न है, वह यह कि स्वतंत्रता और समाजवाद की लड़ाई किस प्रकार लड़ी जाए, व्यक्तियों और समूहों द्वारा सशस्त्र कार्रवाई ही तात्कालिक कार्य है। हमारा मानना है कि इसके अलावा और कुछ भी संवैधानिक भ्रमों को नहीं तोड़ सकता, देश को उस पकड़ से मुक्त नहीं कर सकता जिसमें वह जकड़ा हुआ है। जब सरकार के सबसे अलोकप्रिय अधिकारियों और जन आंदोलन के विरुद्ध हमारे द्वारा चुने हुए बिंदुओं और अवसरों पर किए गए हथौड़ों के प्रहारों से शांति भंग होगी, तो हम आंदोलन से जुड़ेंगे, इसकी सशस्त्र टुकड़ी के रूप में कार्य करेंगे और इसे समाजवादी दिशा देंगे।

सिंह भगत (1930) पुस्तक समीक्षा — मैं नास्तिक क्यों हूँ, भगत सिंह, भगत सिंह ने 1930 में लाहौर सेंट्रल जेल में कैद रहते हुए "मैं नास्तिक क्यों हूँ" पुस्तक लिखी थी। यह पुस्तक 1931 में लाला लाजपत राय के साप्ताहिक "द पीपल" में प्रकाशित हुई थी। स्पष्ट रूप से कहें तो यह कोई पुस्तक

नहीं बल्कि 24 पृष्ठों का एक निबंध है। बाद में पेरियार ई.वी. रामासामी ने पी. जीवनानंदम से इस निबंध का तमिल में अनुवाद करने को कहा। यह तमिल संस्करण पेरियार के तमिल साप्ताहिक कुडी अरासु में 1935 में प्रकाशित हुआ था। बाद में, इस निबंध का अंग्रेजी संस्करण खो गया और कुछ लोगों ने इसे तमिल संस्करण से वापस अंग्रेजी में अनुवादित किया। यही संस्करण आज हमें ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों जगह मिलते हैं। यह किताब इस सवाल से शुरू होती है कि क्या घमंड भगत सिंह की नास्तिकता का कारण था। जाहिर है, कुछ लोगों ने उन पर इसका आरोप लगाया था और उन्होंने इस निबंध के माध्यम से इस आरोप का जवाब दिया। उनके अनुसार, घमंड या अहंकार उनके विश्वास के आड़े नहीं आया। वह केवल सर्वशक्तिमान सर्वोच्च सत्ता के अस्तित्व को नकारते हैं और घमंड इसका कारण नहीं है।

भगत सिंह बचपन से ही नास्तिक थे। वह आस्तिक परिवार से आते हैं। वास्तव में, वह स्कूल में घंटों गायत्री मंत्र का जाप करते थे। हालाँकि, अंततः उन्हें अपने विश्वास पर सवाल उठने लगे और वे अविश्वास में विश्वास करने लगे। जब वे क्रांतिकारी दल में शामिल हुए और जब उन्होंने अपने साथियों को अच्छी तरह से जाना, तो उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उन्हें अविश्वास के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। वास्तव में, ये सदस्य विश्वास के मामले में न तो यहाँ थे और न ही वहाँ।

शोध पत्र में प्रयोग होने वाली शोध विधि

वर्तमान परिस्थितियों में भगत सिंह के वैचारिक दर्शन का ऐतिहासिक अध्ययन, शोधार्थी के इस शोध पत्र में मुख्य रूप से भारत देश की आजादी में भगत सिंह के योगदान का उल्लेख किया गया है वह **इस शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है।** यह शोध विधि इस शोध में महत्वपूर्ण भूमिका में रही हैं। शोधार्थी इसी शोध विधि का प्रयोग इस शोध में किया है।

शोध पत्र के उद्देश्य

वर्तमान परिस्थितियों में भगत सिंह के वैचारिक दर्शन का ऐतिहासिक अध्ययन, इस शोध को पूरा करने के लिये शोधार्थी ने निम्न शोध उद्देश्यों का चयन किया है, जिनको शोधार्थी ने इस प्रकार शोध में पूरा किया है–

- भगत सिंह के क्रांतिकारी कार्यो और उनके स्वतंत्रा संग्राम में योगदान का अध्ययन विस्तार से इस शोध पत्र में किया गया है।
- भगत सिंह की वैचारिक पृष्ठभूमि का अध्ययन इस शोध पत्र में किया गया है।
- भगत सिंह की सामाजिक, आर्थिक विचारधारा का अध्ययन इस शोध पत्र में किया गया है।

शोध प्रश्न

वर्तमान परिस्थितियों में भगत सिंह के वैचारिक दर्शन का ऐतिहासिक अध्ययन, इस शोध को पूरा करने के लिये शोधार्थी द्वारा निम्न शोध प्रश्न का निर्माण किया है, जो इस प्रकार है–

- प्रश्न भगत सिंह के क्रांतिकारी कार्यो और उनके समकालीन अन्य क्रांतिकारियों के कार्यो का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनों में समीक्षात्मक परिणाम क्या है?
- प्रश्न भगत सिंह समकालीन भारत की तत्कालीन परिस्थितियाँ से पडने वाले प्रभाव क्या है?
- प्रश्न भगत सिंह की वैचारिक पृष्ठभूमि और अन्य समकालीन क्रांतिकारियों की वैचारिक पृष्ठभूमि का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनों पर प्रभाव क्या है?

निष्कर्ष व्यक्तिगत रूप से भगत सिंह को फिल्में देखना, रसगुल्ले खाना काफी पसंद था। उन्हें चार्ली चौप्लिन की फिल्में बहुत पसंद थी। यदा–कदा समय मिलते ही वह अपने मित्रों के साथ फिल्में देखने चले भी जाते थे। किंतु १९२४ में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के मुख्य प्रचारक के रूप में, तत्पश्चात १९२६ में नौजवान सभा के गठन के बाद अपने संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भगत सिंह ने अपने व्यक्तिगत जीवन को दरकिनार कर, अपना सर्वस्व राष्ट्र पर न्योछावर कर दिया। उनके प्रत्येक संगठन का अंतिम लक्ष्य स्वाधीनता प्राप्त करना था। जीवन जीने की कला में भगत सिंह निपुण थे किन्तु उनका मानना था, कि जो व्यक्ति उन्नति के लिए राह में खड़ा होता हैं उसे परम्परागत अनुचित चलन की आलोचना एवं विरोध करना होगा साथ ही उसे चुनौति देनी होगी। मैं यह मानता हूँ कि मैं महत्वकांक्षी, आशावादी एवं जीवन के प्रति उत्साही हूँ लेकिन आवश्यकतानुसार मैं इन सबका परित्याग कर सकता हूँ यही एक मात्र मेरा और इस संगठन का उद्देश्य होना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- क्रान्तिवीर भगत सिंह : अभ्युदय और भविष्य, संपादक– चमनलाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2012, पृ०–232.
- क्रान्तिवीर भगत सिंह : अभ्युदय और भविष्य, संपादक– चमनलाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2012, पृ०–279.
- भारत में सशस्त्र क्रांति–चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, नागरी प्रेस, प्रयाग, संस्करण–1939, पृष्ठ–237.
- Gaur (2008), पृ० 53
- "Shahid Bhagat Singh: शहीद सरदार की पुण्यतिथि पर जानिए भगत सिंह के क्रांतिकारी विचार। स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास (भाग–दो) पृष्ठ–५६५
- भगत सिंह नास्तिक क्यों थे? मूल से 8 नवंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 नवंबर 2017.
- "On Bhagat Singh's death anniversary: 'Why I am an atheist'"- मूल से 2 अक्तूबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 अक्तूबर 2017.
- भगत सिंह की जिंदगी के वे आखिरी 12 घंटे मूल से 26 अक्तूबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 नवंबर 2017.
- Chinmohan Sehanavis- "Impact of Lenin on Bhagat Singh's Life"- Mainstream Weekly- मूल से 7 नवंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 October 2011.
- स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास (भाग–दो) पृष्ठ–५६६